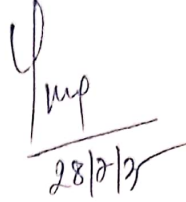
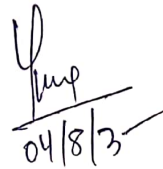



28/7/25 फावली पेश हुई। वकील अमरपक्ष उपस्थित
बदल देबु अक्सर चाघ, जो पिया गया।
फावली वास्ते बदल प्रॉपत्र दि. 4/8/25
को पेश हो।


28/8/25

4/8/25 फावली पेश हुई। वकील अमरपक्ष उपस्थित।
फावली वास्ते बदल दि. 18/08/25 को
पेश हो।


04/8/25

18/8/25 फावली पेश हुई। वकील अमरपक्ष उपस्थित।
बदल अमरपक्ष सुनी गयी। फावली वास्ते
आदेश प्रॉपत्र 09R7 CPC दि. 01/08/25
को पेश हो।


18/8/25

अनुरोध

21/08/25 फावली पेश हुई। वकील अमरपक्ष उपस्थित। बदल
क्र० पत्र 09R7 CPC के परिपेक्ष्य में फावली का अवलोकन
किया गया। कानूनी प्रावधानों व पेश न्यायिक दृष्टांतों
का समामानपूर्वक मजन किया गया।

2. आर्जे० प्राची/रेस्पो. द्वारा कथन किया गया कि
दस्तावेज अपील क्र० 03/2022 में दिनांक 18/5/2022 तक
प्राची/रेस्पो क्रम 2 व 3 की ओर से A-10 श्री शैश



तारीख
हुकम

हुकम या कार्यवाही या मय इनिशियल्स जज

अप
हुकम
में जा

चंड नागर ने उपस्थिति दी थी लेकिन next hearing date पर प्रार्थी को सूचना दी गई बिना ही न्यायालय से अनुपस्थित रहे जिससे दिनांक 29/06/2022 को रैसपोर्ट्स के बिना एकपक्षीय कार्यवाही हो गई थी अतः वकील द्वारा की गई गलती को राजा पक्षकार को नहीं दी जावे। आगे तक किप कि हस्तगत अपील एन 03/2022 के साथ समान वादग्रस्त आराजी को लेकर एक अन्य वाद एन 101/2021 भी इसी न्यायालय में दिनांक 29/6/2022 को नियत था जिसमें प्रार्थी के वकील श्री रमेश चंड नागर ने present दी थी लेकिन भूलवश हस्तगत appeal में present नहीं हो पाये थे। आगे तक किप कि प्रार्थी व प्रार्थी का पुत्र वर्ष 2022 के दौरान लम्बे समय तक बीमार रहने एवं Hospital में admit रहने से प्रकरण को एकपक्षीय कार्यवाही की जागकारी नहीं हो पाई अतः न्यायालय से निवेदन है कि प्रकरण में न्यायहित में प्रापत्र को स्वीकार कर सुनवाई का अचसर देते हुए युवाकथुण पर नियंत्रण करें।

3. श्री. आराधी / ~~स्त्री~~ अपीलवांत ने अन्त घटका का पुरावों विरोध करते हुए कथन किप कि प्रार्थी या प्रार्थी के वकील ने हस्तगत प्रकरण एन 03/22 में कभी भी उपस्थिति नहीं दी। प्रार्थी के बिना दिनांक 29/06/2022 को ex-parte order जारी किया और दिनांक 23/04/2025 को hearing conclude होकर प्रकरण judgement को pronounce करने हेतु दिनांक 19/05/2025 को adjourn किया गया था। इसके बाद दिनांक 03/6/2025 को भी प्रार्थी उपस्थित नहीं हुए। आगे तक किप कि final hearing होने और प्रकरण को judgement के बिना reserve करने बाद आदेश 9 निम्न



नम्बर व तारीख
अहकाम जो इस
हुकम की तालीम
में जारी हुए

हुकम या कार्यवाही या मय इनिशियल्स जज

नम्बर व तारीख
अहकाम जो इस
हुकम की तालीम
में जारी हुए

5. Order 7 Rule 7 CPC के अधीन यथापि कोई समझौता तय नहीं है, तथापि final hearing conclude होने से पूर्व तक ही पेश किया जा सकता है। एक बार सभी arguments and evidence को final रूप से सुनकर प्रकरण की judgement के लिए reserve कर दिया गया हो तो फिर आदेश 7 नियम 7 CPC के अधीन कोई अनुतोष प्राप्त नहीं किया जा सकता है। प्रचीन न्यूनतम निर्णय/डिक्री के बाद OR 13 CPC के अधीन ही अनुतोष प्राप्त कर सकते हैं।

6. Bihari Lal v/s Jagannath Sharma 2001 मामले में माननीय Himachal Pradesh High Court ने प्रतिपादित किया है कि "once the case is posted for judgement, the opportunity to file such an application is typically lost. The inherent powers of the court cannot override the explicit provisions of the civil procedure Code. Therefore, after the case is posted for judgement, inherent powers cannot be invoked to entertain an application under Order IX Rule 7 of the Code."

7. Jyoti Devi v/s Ld. Munsiff, Basohli 2014 मामले में माननीय जम्मू व कश्मीर उच्च न्यायालय ने तथा A.T. Soma Sundaram v/s G. praveen Pillai 2024 मामले में माननीय महाराष्ट्र उच्च न्यायालय ने प्रतिपादित किया है कि "once the case is posted for judgement, the remedy shifts to filing an application under OR 13 for setting aside a decree or ex-parte judgement, not under Rule 7 of the Code."

8. The Himachal Pradesh High Court in sep 2022 held that the application for setting aside ex-parte order can be entertained only if filed



तारीख
हुकम

हुकम या कार्यवाही या मय इनिशियल्स जज

हुकम
में
bef

7 CPC के अधीन प्रॉफर पेश नहीं किया जा सकता है। अंतिम निर्णय सुनाने के बाद ही प्रार्थी के लिए विकल्प उपलब्ध होगी। इसके अतिरिक्त प्रार्थी द्वारा वर्ष 2022 में लम्बे समय तक बीमार रहने का कोई भी साक्ष्य पेश नहीं किया है। वर्ष 2023, 2024 व 2025 में भी court में समक्ष उपस्थित नहीं होने का कोई कारण पेश नहीं किया गया है। प्रार्थी ने प्रॉफर रैसो क्रम 2 की ओर से यह प्रॉफर पेश किया है कि उनके relief रैसो 2 व 3 के लिए चाहा गया है अतः judgement pronounce होने की stage पर एवं बिना good cause के यह प्रॉफर 09R7 खारिज योग्य है।

4. वरिष्ठ अभ्यपक्ष के परिपेक्ष्य में मूल प्रकरण 180/03/2022 उनका ग्यारसीराम बनाम बालचंद्र की की आदेशिका का अन्वयन किया गया। प्रकरण में प्रार्थी / रैसो 0 के कोर्ट में उपस्थित होने का कोई साक्ष्य नहीं है, ना ही प्रार्थी की ओर से किसी क्लीप (pleader) द्वारा पेशी हेतु कोई क्वालिफिकेशन पेश किया गया। दिनांक 29/6/2022 को प्रार्थी / रैसो 0 की absence रहने पर इनके विरुद्ध ex-parte order जारी किया गया था। Ex-parte order के बाद करीब 03 वर्षों तक प्रार्थी की ओर से 09R7 CPC का प्रॉफर लेकर नहीं आये। प्रार्थी द्वारा वर्ष 2022 में लम्बे समय तक बीमार रहने का भी कोई साक्ष्य (evidences) कोर्ट में पेश नहीं किया है। प्रार्थी भवराज द्वारा रैसो 2 व 3 के लिए यह प्रॉफर पेश किया है कि उनके रैसो 3 के लिए पेश करने का कोई आदीकार-पत्र भी पेश / स्मलोन नहीं किया गया है। अतः प्रार्थी द्वारा 03 वर्षों की delay का कोई good cause पेश नहीं किया है।



हुकम या कार्यवाही या मय इनिशियल्स जज

नम्बर व तारीख
अहकाम जो इस
हुकम की तालीम
में जारी हुए


before conclusion of the hearing.

9. Arjun Singh v/s Mahindra Kumar & Ors.
AIR 1964 SC 1993 मामले में माननीय सर्वोच्च
न्यायालय से प्रतिपादित किया है कि "an application
under O.R.7 CPC is maintainable only before the
hearing is concluded. If the matter is posted
for judgement, the defendant cannot be allowed
to rejoin the case under O.R.7." इसी प्रकार

Bhanu Kumar Jain v/s Archana Kumar (2005) 1
SCC 787 मामले में माननीय सुप्रीम कोर्ट द्वारा
सामने निर्धारित किया है कि "After the conclusion
of arguments, the defendant has no right under
Order 9 Rule 7 CPC. The only remedy is under
O.R. 13, after the decree is passed."

10 उपरोक्त विवेचन एवं व्यापक दृष्टांती के परिपेक्ष्य
में प्रार्थना/रैलियों 0 का प्रारंभ O.R.7 CPC खारिज
किया जाता है। पत्रावली वाली आदेश/डिनांय
24/9/25 की चेक है।




21/08/25
उपखण्ड अधिकारी
पिठुवा, जिला मध्यप्रदेश (राज०)